BA-I Date Page-1
Paper-I 7/08/2020
Unit- 6

Dr. Raj Gopal.
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy.
V.S.J. College Rajnagar Madhubani.
Mail ID:- rajgopal7755@gmail.com.

Topic :- The Third Noble Truth

तृतीय आर्य सत्य (दुःख- निरोध)
(निर्वाण)

तृतीय आर्य सत्य में बुद्ध ने दुःख निरोध पर चर्चा की है। जिसे बौद्ध दर्शन में निर्वाण कहा जाता है। भारत के अन्य दर्शन में जिस अवस्था को मोक्ष कहा जाता है बौद्ध दर्शन में उस अवस्था को निर्वाण कहा जाता है। यह बौद्ध दर्शन का चरम लक्ष्य है।

बुद्ध का मानना है कि व्यक्ति अपने जीवन काल में भी निर्वाण प्राप्त कर सकता है। जब व्यक्ति राग द्वेष मोह आसक्ति अहंकार इत्यादि पर विजय प्राप्त कर लेता है तब वह मुक्त हो जाता है। मुक्त व्यक्ति को बौद्ध दर्शन में अर्हत कहा जाता है। महात्मा बुद्ध भी अपने जीवन काल (35y) में ही मुक्त हो गये थे। उसके बाद भी लगभग 45 वर्ष तक जीवित रहे थे। इस प्रकार से बुद्ध के समान अन्य व्यक्ति भी अपने जीवन काल में निर्वाण प्राप्त कर सकता है। उनका मानना है कि शरीर पूर्व जन्मों का कर्मों का फल है। कर्म के समाप्त होने पर ही शरीर का क्षय हो सकता है। इस प्रकार से बौद्ध दर्शन जीवन मुक्ति एवं विदेह मुक्ति दोनों को मानता है। बौद्ध दर्शन में निर्वाण का अर्थ जीवन का अन्त नहीं बल्कि ऐसी परमानन्द की अवस्था है जो जीवन काल में प्राप्त होता है।

Scanned with CamScanner

निर्वाण निष्क्रियता की अवस्था नहीं है। इसको प्राप्त करने के लिए सभी कर्मों को त्याग कर बुद्ध के चार आर्य सत्यों का मनन एवं निदिध्यासन करना चाहिए ज्ञान प्राप्त हो जाने के उपरांत कर्म से अलग रहने की आवश्कता नहीं होती है। लोक कल्याण की भावना से प्रेरित होकर अन्य मनुष्यों के दुःखो से निवृत्ति हेतु कर्म किया जा सकता है। बुद्ध का संपूर्ण जीवन इसका अनुठा उदाहरण है। बुद्ध ने दो प्रकार की कर्मों की चर्चा की है। (i) आसक्त कर्म (ii) अनासक्त कर्म। आसक्त कर्म लोभ, मोह, राग द्वेष से संचालित होता है। यह कर्म मानव के बन्धन में डालते है। अनासक्त कर्म राग, द्वेष, मोह से रहित होकर तथा संसार को अनित्य समझकर किया जाता है। इस कर्म का फल ग्रहण नहीं करना पड़ता। यह कर्म भूंजे हुए चने के समान होता है। जिससे की फल की उत्पत्ति नहीं होती है। जहां आसक्त कर्म उत्पादक बीज है वहीं अनासक्त कर्म अनुत्पादक बीज है। बुद्ध की अनासक्त कर्म भावना गीता के निष्काम कर्म से मेल खाता है।

बुद्ध निर्वाण के संबंध मे कुछ नहीं बोले है। निर्वाण संबंधित प्रश्न पर वह मौन रह जाते है। इस कारण बौद्ध दर्शन में निर्वाण के संबंध में भावात्मक एवं निषेधात्मक दो प्रकार की विचारधाराएँ उत्पन्न हुई। निषेधात्मक विचारकों ने निर्वाण का अर्थ बुझा हुआ माना है। वे निर्वाण की तुलना दिपक के बुझ जाने से किया है। जिस प्रकार से दिपक के बुझ जाने से उसका प्रकाश का अंत हो जाता है। उसी प्रकार से निर्वाण प्राप्त कर लेने पर व्यक्ति का सारा दुःख समाप्त हो जाता है। इसके उत्तर

इस मत के अनुसार निर्वाण का अर्थ पूर्ण विनाश लिया। दूसरे मत के अनुसार निर्वाण का अर्थ जीवन का अंत नहीं है। इसके समर्थक पौलि दहल्ल, हीनयान संप्रदाय आदि हैं। बौद्ध दर्शन के संदर्भ में निर्वाण का यह निषेधात्मक अर्थ तर्कसंगत नहीं है। बुद्ध के सारे उपदेश इस बात का प्रमाण हैं इन्होंने मृत्यु से पूर्व निर्वाण को अपनाया था। अतः निर्वाण का अर्थ जीवन का अंत समझना भ्रमात्मक है।

भावात्मक मत के समर्थकों ने निर्वाण का अर्थ शीतलता लिया है। बौद्ध दर्शन में वासना, क्रोध, मोह भ्रम दुःख आदि को अग्नि के समान माना गया है। निर्वाण का अर्थ वासना एवं दुःख रूपी आग का ठण्डा हो जाना है। निर्वाण को आनन्द की अवस्था कहा गया है। इस मत के समर्थक मैक्समूलर, पुसिन, राधाकृष्णन आदि हैं। राधाकृष्णन के अनुसार "निर्वाण आध्यात्मिक संघर्ष की सिद्धि है एवं भावात्मक आनन्द की अवस्था है"।

पाली ग्रन्थ के अनुसार निर्वाण आनन्द की अवस्था है। धम्मपद में निर्वाण को आनन्द, परमसुख, पूर्ण शान्ति, तथा लोभ घृणा और भ्रम से रहित अवस्था कहा गया है (निब्बानं परमं सुखम्)। निर्वाण को आनन्दमय अवस्था मानने के कारण कुछ विद्वानों ने बौद्ध दर्शन पर सुखवाद का आक्षेप लगाया है। परन्तु निर्वाण को आनन्द की अवस्था मानने के कारण बुद्ध को सुखवादी कहना अप्रासंगिक है, क्योंकि आनन्द की अनुभूति सुख की अनुभूति से भिन्न है। सुख की अनुभूति अस्थायी और दुःखद है, परन्तु आनन्द की अनुभूति अमृत तुल्य है।

निर्वाण का मुख्य स्वरूप अनिर्वचनीय है। तर्क और विचार के माध्यम से ऐसी अवस्था के बारे में बतलाना असंभव है। सभी व्यवहारिक शब्द अवर्ण नीय का वर्णन करने में असमर्थ है। नागसेन ने निर्वाण की व्याख्या करते हुए कहा है कि - यह लोहार की तरह गहरा, पर्वत की तरह ऊँचा और मधु की तरह मधुर है। इसका स्वाद उन्हें ही हो सकता है जो इसका अनुभव किये है। जिस प्रकार से अन्धे को रंग का ज्ञान नहीं हो सकता है उसी प्रकार से जिसे इसकी अनुभूति नहीं है, उसे निर्वाण का ज्ञान कराना असंभव नहीं है। अतः निर्वाण की सारी परिभाषाएँ निर्वाण की वास्तविक स्वरूप को बतलाने में असमर्थ है।